जून २०१६

दादा भगवान परिवार का

कीमत ₹ १२/-

अक्रम एक्सप्रेस

बुद्धि VS हार्ट

बुद्धि vs हार्ट

अक्रम एक्सप्रेस

संपादकीय

बालमित्रों,

आप सभी ने सुना ही होगा कि आपके दादा जी-दादी जी को सभी दिलवाले कहते थे और आपकी ही तरह, हर एक घर के बुजुर्ग दिलवाले ही होते हैं। जबकि आज का जेनरेशन बुद्धिवाला कहलाता है।

पता है, क्या फर्क है इस बुद्धिवालों और दिलवालों में? शायद थोड़ा सा पता होगा लेकिन इस अंक में आज हम इसी विषय पर विस्तार से बातें समझनेवाले हैं। ये बहुत ही सुंदर और रुचिप्रद बातें हैं। आइए पढ़ते हैं और हम दिल की तरफ किस तरह से आगे बढ़ें यह समझते हैं।

- डिम्पल मेहता

संपादक:
डिम्पल मेहता
वर्ष : ४ अंक : ३
अखंड क्रमांक : ३९
जून २०१६

....

Printed & Published by

Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

Printed at
Amba Offset
Basement, Parshvanath
Chambers, Nr.RBI,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

संपर्क सूत्र
बालविज्ञान विभाग
त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद - कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला . गांधीनगर - ३८२४२१,
गुजरात
फोन : (०७९) ३९८३०१००
email:akramexpress@
dadabhagwan.org
Website:
kids.dadabhagwan.org

वार्षिक सदस्यता(हिन्दी)
भारत :१२५ रुपये
यू.एस.ए. :१५ डॉलर
यू.के. :१० पाउन्ड
पाँच वर्ष
भारत : ५०० रुपये
यू.एस.ए. : ६० डोलर
यू.के. : ४० पाउन्ड
D.D/ M.O 'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम पर भेजें।

दादाश्री : एक हार्ट और एक बुद्धि। हार्ट मोक्ष में ले जाने के लिए हेल्प करता है और बुद्धि उलझनें पैदा करती रहती है। बुद्धि से ही संसार खड़ा हुआ है।

प्रश्नकर्ता : दिल यानी, क्या कहना चाहते हैं?

दादाश्री : दिल यानी शुद्ध प्रेमपूर्वक का मार्ग।

दीपकभाई : इंसान में बुद्धि बढ़ जाए और हार्ट की प्योरिटी नहीं रहे तो वह ठीक से काम नहीं करेगा, हार्टिली

ज्ञानी कहते हैं...

होना चाहिए। अकेली बुद्धि भटका देती है। भगवान के यहाँ हार्टवाले का काम है। भले ही गँवार दिखे लेकिन हार्टिली व्यक्ति का काम है!

दिलवाले का व्यवहार आदर्श होता है। बहुत लगाववाला दिखता है। किसी का दुःख उसे अपना ही दुःख लगता है और उसके लिए दिल व्याकुल हो जाता है, अरेरे! बेचारे को इतना दुःख! और फिर वह सब तरह से हेल्प करता है।

बुद्धिवाला दिखावा करता है कि मुझे तुम्हारे लिए कितना लगाव है लेकिन बदले में तुझे मेरे लिए लगाव है या नहीं उसे भी चेक करता है और उसे ऐसी अपेक्षा भी होती है और यदि पता चले कि लगाव नहीं है तो धीरे से खिसक लेता है। इसलिए इस बुद्धि के तूफान तो बहुत ही जटिल हैं।

प्रश्नकर्ता : दिल तक पहुँचने के लिए संत पुरुष या ज्ञानीपुरुष के सत्संग और दर्शन की ज़रूरत है न?

दादाश्री : हाँ, दर्शन और सत्संग की ज़रूरत है। उस दर्शन से तो काम निकल जाएगा। बुद्धि सभी जगह भटका देती है और दिल से किए हुए विचार, वाणी और वर्तन भगवान बना देते हैं।

यदि हमारा
व्यवहार(वर्तन)
बुद्धिवाला होता है तो
सामनेवाले का भी
बुद्धिवाला ही होता है।
और यदि हमारा
व्यवहार(वर्तन)
दिलवाला होता है तो
सामनेवाले का भी
दिलवाला ही होता है।

यह तो नई

चाहे कितना भी खराब
दोष हो जाए लेकिन यदि
उसका आपको दिल से
पश्चाताप होता है तो वह
दोष खत्म होकर ही रहेगा।

हार्टवाले का
व्यवहार आदर्श
होता है।

ही बात है !

दिलवाले व्यवहार का
प्रतिस्पंदन आता ही है।
सामनेवाले को दुःख नहीं
होता। इसी तरह बुद्धिवाले
के व्यवहार का भी
प्रतिस्पंदन आता है।
सामनेवाले को दुःख हो
जाता है।

बुद्धि vs हार्ट

VS

१. फायदा-नुकसान दिखाती है	- हित-अहित दिखाता है
२. खुद का ही फायदा दिखाती है, सामनेवाले का जो होना हो वह हो	- सभी का हित ही चाहता है।
३. कठोरता उत्पन्न हो जाती है	- मृदुता-सरलता उत्पन्न जाती है
४. सामनेवाले के लिए तिरस्कार भाव होता है	- उपकार भाव होता है
५. सामनेवाले से बदले की अपेक्षा रहती है	- कोई अपेक्षा नहीं होती
६. सभी के साथ भेद रखती है	- मिलजुलकर रहता है, सामनेवाला भेद रखे फिर भी खुद भेद नहीं पड़ने देता
७. स्वार्थ होता है	- प्रेम होता है
८. ज्ञान के लिए ज़रूरी नहीं है	- ज्ञान के लिए ज़रूरी है
९. उलझनें बढ़ाती है	- उलझनें कम करता है
१०. सोचकर निर्णय लेती है	- समझकर निर्णय लेता है
११. शांति से बैठने नहीं देती	- शांति रहती है, स्थिरता रहती है
१२. संसार में भटकाती है	- भगवान बनाता है
१३. इमोशनल करती है	- मोशन में रखता है
१४. दूसरों के दोष दिखाती है	- खुद की भूलें दिखाता है
१५. अहंकार ज्यादा होता है	- अहंकार कम होता है
१६. चंचल होती है	- स्थिर और स्वस्थ होता है

दिल की रीत

सालों पुरानी और मशहूर मिल, शाह एन्ड सन्स के मालिक मि. प्रवीण शाह अपने पुत्र विजय, जो हाल ही में अमेरिका से मार्केटिंग में एम.बी.ए. करके आया था, उसके साथ आज के बिज़नेस टुडे की हेडलाइन के बारे में चर्चा कर रहे थे।

"जो एक्सपॉर्ट ऑर्डर इतना बड़ा था कि उसे शाह एन्ड सन्स भी पूरा नहीं कर सकते थे, उसे जय हिंद मिल्स ने समय पर पूरा कर दिया।"

प्रवीण शाह ने आश्चर्य से पूछा कि, "यह मिल दो सालों से ही खुली है, इतनी ज्यादा मशहूर कैसे हो सकती है? और वे हम से आधे कारीगरों और कर्मचारियों के साथ किस तरह हमें टक्कर दे रहे हैं?" विजय ने भी कहा, "मुझे तो यह आश्चर्य होता है कि वहाँ कारीगरों की कोई यूनियन भी नहीं है! जस्ट कान्ट बिलीव!"

"हमारी व्यापार पद्धतियाँ तो जमाने के हिसाब से ही चल रहीं हैं। कुशल और होशियार कारीगर और विशेषज्ञ कर्मचारियों को ही हम नौकरी पर रखते हैं। हमारी व्यापार बुद्धि और अनुभव में आधुनिक थियरी शामिल हो इसलिए तुम्हें विदेश में एम.बी.ए. कराया। मुझे लगता है कि किसी तरह घुसपैठ करके जयहिन्द मिल्स की सफलता का कारण ढूँढ़ना पड़ेगा।" विजय ने खड़े होकर कहा, "डोन्ट वरी डैडी। मैं ट्रेनी मार्केटिंग मैनेजर बनकर जाऊँगा और पता लूँगा कि, उनका ऐसा क्या तरीका है जो कम व्यक्तियों के साथ भी दुगना काम निकलवाते हैं और फिर भी कर्मचारियों में कोई असंतोष नहीं है!"

आठ दिन बाद जब जयहिन्द मिल की मीटिंग

हुई, तब विजय भी ट्रेनी की हैसियत वहाँ मौजूद था। मिल के मालिक मि. हार्दिक पंड्या ने बोलना शुरू किया, "कैसे हैं मेरे परिवार के सभी सदस्य? सब ठीक तो चल रहा है न? घर पर बच्चे और परिवार में सभी अच्छे हैं? किसी को कोई तकलीफ तो नहीं है न?" यह सब सुनकर एक मिनट के लिए विजय सोच में पड़ गया, फिर धीरे से बड़बड़ाया, "यह मीटिंग है या मज़ाक? कितना उत्पादन हुआ? कैसा मार्केटिंग चल रहा है? किस खाते में कितना खर्चा.. आदि पूछने के बदले यह सब क्या है"?

यह सुनकर उसके पास बैठे हुए एक कर्मचारी ने कहा, "भाई, यह पंड्या साहब तो ऐसे ही हैं। यह जो आप कह रहे हैं ऐसी बातें तो सभी बुद्धि-जीवियों की कंपनी में होती होंगी। यहाँ तो हर महीने एक-दूसरे का कुशल-मंगल पूछने के लिए ही मीटिंग होती है। हाँ, जब मिल का खास प्रश्न आता है तब पंड्या साहब के एक ही बार कहने पर एक-एक कारीगर और कर्मचारी मिलजुलकर उसका समाधान कर ही लेते हैं। उदाहरण के तौर पर यह एक्सपॉर्ट ऑर्डर, जो हाल ही की ताजा खबर है... शाह एन्ड सन्स जो ऑर्डर पूरा नहीं कर पाए, हमारे कर्मचारियों ने उसे चुनौती की तरह लिया। दिलोजान से पूरी लगन से काम पूरा किया। साहब ने भी रात-दिन एक करके कर्मचारियों के साथ-साथ मेहनत की थी।" उधर बारी-बारी से हर एक के साथ पंड्या साहब बात कर रहे थे।

"तो फिर दुगनी पगार भी मिली होगी न? नहीं तो शोषण कहा जाएगा। कर्मचारी यूनियन बनाई हो तो वो यह सब नहीं चलने दें।" विजय ने परीक्षा लेनी चाही। "यह क्या कह रहे हो? कर्मचारी यूनियन?" कर्मचारी भड़का। "पिता के समान पंड्या साहब तो सभी कर्मचारियों की दिल से देखभाल करते हैं और उनके सुख-दुःख में सब से आगे होते हैं। साहब तो इस ऑर्डर को नहीं लेना चाहते थे,

"ऐसी बातें तो सभी बुद्धि-जीवियों की कंपनी में होती होंगी। यहाँ तो हर महीने एक-दूसरे का कुशल-मंगल पूछने के लिए ही मीटिंग होती है।"

क्योंकि उन्हें लग रहा था कि इतना बड़ा ऑर्डर पूरा करने में हमारे कर्मचारियों को बहुत मेहनत करनी पड़ेगी और ज्यादा घंटे काम करना पड़ेगा। ऐसा करेंगे तो उनके परिवारवालों को तकलीफ होगी लेकिन कर्मचारियों की भावना के आगे वे झुक गए," वह व्यक्ति थोड़ा रुककर बोला।

"लेकिन यह सब एक तरफा नहीं कहा जाएगा? चलो माना, कि मिल के कर्मचारी दिल से काम करते हैं लेकिन पंड्या साहब उनके लिए क्या करते हैं?" विजय ने फिर से एक बार प्रयत्न किया। उस व्यक्ति ने आश्चर्य से विजय की तरफ देखा और पूछा, "भाई, इस शहर के नहीं लग रहे हो। नए आए हो?" "हाँ" विजय ने शॉर्ट में जवाब दिया।

"अब समझा। भाई, पंड्या साहब ने हमारे लिए क्या नहीं किया। हकीकत में तो यह मिल हमारे लिए ही खोली है।" वह व्यक्ति अतीत में चला गया। "हमारा मोहल्ला पंड्या साहब का जन्म स्थल है, उनके पिता जी की बदलियाँ होती रहतीं थीं, इसलिए उन्हें एक शहर से दूसरे शहर में रहना पड़ता था। पिता जी की मृत्यु के बाद उन्हें बैंक की नौकरी मिली। यह मोहल्ला और यहाँ के लोग हमेशा से ही उन्हें बहुत प्रिय थे। वह अपनी पत्नी और बच्चों को लेकर एक बार यहाँ आए तो उन्होंने मोहल्ले के लोगों का हाल देखा। एक बड़ा कारखाना बंद हो जाने की वजह से, हमारे और आसपास के ८-१० मोहल्लो के सभी लोग बेरोज़गार हो गए थे। कोई कुछ खास पढ़ा लिखा नहीं था। बच्चों की पढ़ाई की किसी को परवाह नहीं थी। जिसे जहाँ मज़दूरी का छोटा-बड़ा काम मिलता उससे उनकी ज़िंदगी की गाड़ी चलती रहती थी। पंड्या साहब का दिल यहाँ से वापस जाने के लिए नहीं माना और बैंक की नौकरी से अपनी मरज़ी से निवृति ले ली। अपने घर को बेचकर जीवनभर की पूंजी मिलाकर, लोन लेकर, कारखाना खरीदा और मिल के लिए मशीनें लाए। घर-घर को रोज़गार मिला और हम स्थिर हुए।

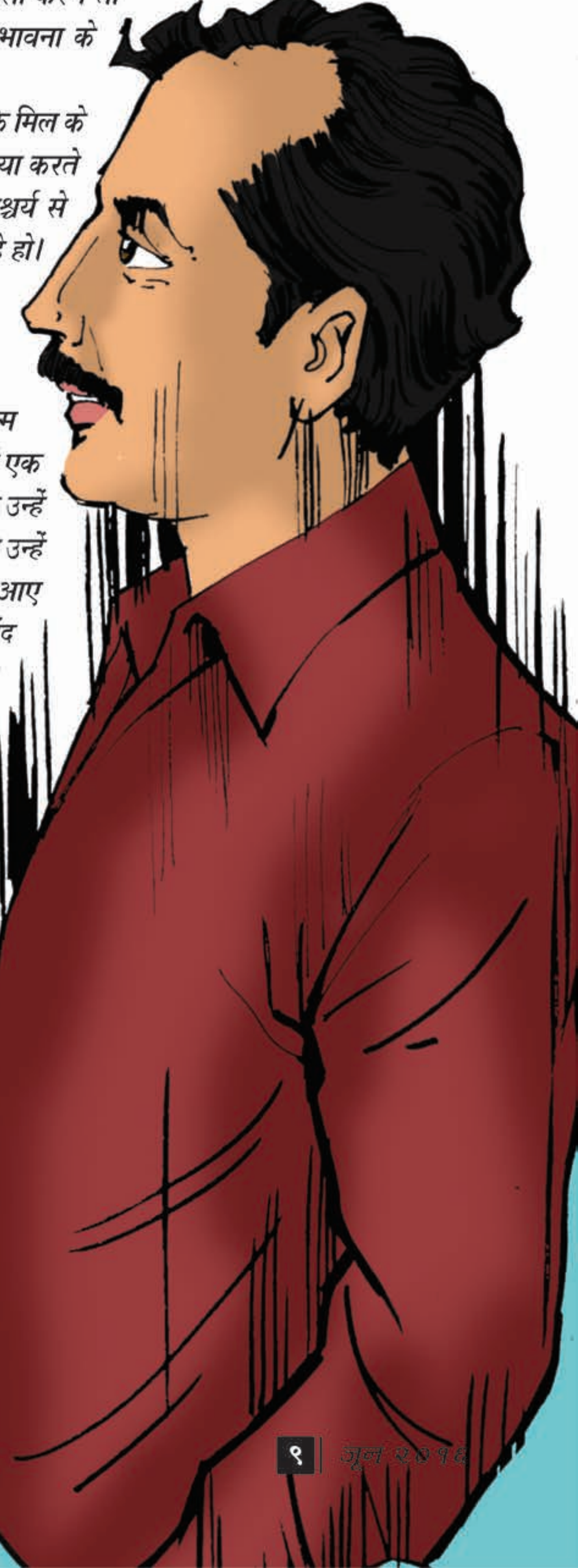

बच्चों को सरकारी स्कूल में नियमित भेजने के लिए समझाया।"

"अरे! एक बार मेरा ही मिल के बाहर अकस्मात होते हुए साहब ने देखा। मुझे तुरंत होस्पिटल ले गए, खून चढ़ाना पड़े, ऐसा था। डॉक्टर ने साहब से कहा कि, इनका ब्लड ग्रुप ओ पॉज़िटिव है, जल्दी से खून लाकर इन्हें बचाओ।" उस दिन को तो मैं कभी नहीं भूलूँगा। जब मुझे होश आया तब उन्होंने मेरा नाम पूछकर कहा, "मैं तेरी महीने की छुट्टियाँ मंजूर करवा

दूँगा। चिंता मत करना, आराम करना और सँभालना। किसी तरह की तकलीफ या कुछ ज़रूरत हो तो मुझे सीधे फोन करना।" आपने ऐसे साहब देखे हैं? जिन्हें अपने साधारण कर्मचारी का नाम भी पता नहीं हो फिर भी उसके लिए फिक्र हो, मदद करने के लिए हमेशा तत्पर हों।"

"हं.." विजय ने अब अलग नज़र से पंड्या साहब को देखा। वे किसी के कंधे पर तो किसी के सिर पर हाथ घुमाते हुए मुस्कुराहट के साथ इतनी आत्मियता से बात कर रहे थे। पता ही नहीं चला और विजय की बारी आ गई। वह उनके पास गया। पंड्या साहब ने हाथ आगे करते हुए कहा, "ट्रेनिंग कैसी चल रही है मि. विजय शाह?" विजय चौंक गया और घबराकर पूछा, "आप मेरा नाम जानते हैं?" हँसते हुए पंड्या साहब बोले, इस रजिस्टर में तुम्हारा नाम और फोटो हैं।"

इतने में उनके पास बैठे हुए मैनेजर को फोन आया। थोड़ी सी बात करके फोन रखते हुए बोले, "साहब, अमेरिकन कंपनी को अपना माल बहुत अच्छा लगा है और अब दूसरा ऑर्डर देने के लिए मुझे अगले हफ्ते बुला रहे हैं.." उसे वहीं रोककर, पंड्या साहब सख्त आवाज़ में बोले, "तुझे अभी कहीं नहीं जाना। तुम्हारी पत्नी को अंतिम महीना चल रहा है। तुम्हारी ज़रूरत अभी घर पर ज्यादा है। मैं तुम्हें इतनी दूर जाने की इज़ाजत नहीं दूँगा।" मैनेजर ने चिंता व्यक्त की, "लेकिन इतना बड़ा मौका चला जाएगा तो मिल को बहुत नुकसान होगा।" पंड्या साहब ने समझाते हुए कहा, "किसी फायदा-नुकसान की मुझे कोई चिंता नहीं है, मुझे सिर्फ अपने मिल परिवार के हित-अहित की चिंता है। किसी भी कर्मचारी या उसके परिवार के लोगों को थोड़ा सा भी दुःख या असंतोष होगा तो इस मिल का क्या करना है? यदि कोई दूसरा जा सकता हो तो उसे भेज देंगे, नहीं तो कोई बात नहीं। लोकल ऑर्डरों से भी अच्छा काम चल रहा है।" मैनेजर चुप हो गया। पंड्या साहब ने घूमकर विजय की तरफ देखा तो वह चला गया था।

विजय को कैबिन की तरफ आते हुए देखकर मि. शाह खड़े हो गए और उन्होंने अपने साथ बैठे हुए दोनों मैनेजरों को जाने का इशारा किया। उनके जाते ही बोले, "बहुत जल्दी पता करके आ गए बेटा! तो क्या है उनकी व्यापार पद्धति। क्या तरीका है उन लोगों का? विजय ने शांति से जवाब दिया, "दिल की रीत।" "मैं कुछ समझा नहीं, ज़रा ठीक से बताओ," मि. शाह ने ज़रा जल्दी की। डैडी, उन लोगों में ऊपर से नीचे तक हर एक कर्मचारी और कारीगर पंड्या साहब के साथ दिल से जुड़े हुए हैं। वे लोग किसी नफे के लिए काम नहीं करते लेकिन पूरे समुदाय के कल्याण के लिए काम करते हैं। किसी बुद्धि, चतुराई या रणनीति के आधार से नहीं लेकिन दिल से, समझ से, प्रेम से, किसी तरह के अहंकार के बिना पंड्या साहब मिल चला रहे हैं और उनके इस व्यवहार के प्रतिस्पंदन के रूप में हर एक कर्मचारी जी-

जान से काम करता है। जिसके परिणाम स्वरूप चाहे कितना भी बड़ा काम हो, वह अच्छी गुणवत्ता के साथ हो जाता है।" दोनों के बीच चुप्पी छा गई और एक-दूसरे को ताकने लगे। मन ही मन वे समझ गए कि ऐसा हमसे तो होनेवाला नहीं है।

आप भी समझ गए न दोस्तों? हार्टवाले का व्यवहार आदर्श होता है।

बुद्धि जीतेगी या दिल ?
परिस्तान की बात है। दो नन्हीं-नन्हीं परियाँ थीं। एक का नाम सोनपरी और दूसरी का नाम नीलपरी था। दोनों इसी इंतज़ार में बड़ी हो रही थीं कि कब उन्हें बड़ी परियों जैसा जादू मिले।
सोनपरी बहुत बुद्धिशाली थी। हर एक काम को बहुत सोचकर और चतुराई से करती थी।
नीलपरी बहुत प्रेमवाली थी। उसके दिल में जो आता वह सोचे बिना कर डालती।
दोनों नन्हीं परियों में जिसके मित्र ज्यादा होंगे उसे परियोंवाला जादू मिलेगा।
इसके लिए उन्हें तीन बार जादू कर पाने की शक्ति दी गई।
सोनपरी तो नीलपरी को साथ लिए बिना ही पूरे परिस्तान में घूमकर मित्र बनाने के लिए निकल पड़ी।
रास्ते में एक उज़ाड मैदान आया, सूखी हुई नदी आई। सोनपरी को तो मित्र बनाने थे इसलिए ध्यान दिए बिना आगे चली गई।
मुझे अपने तीन जादू सोच समझकर उपयोग में लेने हैं कि जिससे मैं ज्यादा मित्र बना सकूँ।

इस तरफ नीलपरी सोनपरी को ढूँढ़ती हुई उजाड़ में पहुँची।
परिस्तान में ऐसी विरान जगह तो नहीं थी? बेचारे पक्षी, पेड़, पौधे, पानी के बिना किस तरह..., अरे हाँ! मेरे पास तो अब जादू है।
तुरंत ही एक जादू करके उसने पूरे वीरान क्षेत्र को रंगीन और सुगंधित फूलों, वृक्षों, लताओं, सुंदर पक्षियों, रंग बिरंगी तितलियों और झरनों से भर दिया।
वह आगे गई तो उसे एक सूखी हुई नदी दिखाई दी,
दूसरा जादू करके उसने नदी को पानी से भर दिया और सभी जलचर प्राणियों में नए प्राण आ गए।
"अरे वाह! यह जादू तो कितना अच्छा है।"
इस तरफ सोनपरी ने एक जादू करके परिस्तान वासियों को उपहार बाँटे। फिर धीरे से पूछा,
"मेरे मित्र बनोगे?"
दो-चार लोगों ने पूछा, इन उपहारों के बदले में? क्या रोज़ उपहार मिलेंगे? इससे हमें क्या लाभ होगा? क्या ये वापस ले लोगी?
मुझे ऐसा लगा था कि उपहार दूँगी तो सभी मेरे मित्र बन जाएँगे। लेकिन... कोई बात नहीं, एक बार फिर...
सभी अपना नाम और मनपसंद उपहार का नाम पत्ते पर लिखकर इसमें डाल दो।

फिर उसने दूसरा जादू करके सभी पत्तों को बॉक्स में तबदील कर दिया, जिसमें व्यक्ति के नाम के साथ उनकी लिखी हुई चीज़ें थीं।
नाम देखकर अपना-अपना बॉक्स ले जाओ।
सभी एक दूसरे को धक्का मारकर अपना-अपना उपहार ढूँढने लगे
शोर सुनकर रानीपरी और नीलपरी वहाँ आ गए।
"यह सब क्या हो रहा है?"
अपने उपहारों को ढूँढते हुए, हुई अफरा-तफरी में सभी चीज़ें इधर-उधर बिखरकर टूट-फूट गई और सभी को चोटें भी आई।

सभी थककर वापस लौटने लगे,
यह देखकर सोनपरी ने तीसरा जादू करके सभी उपहारों को वापस ठीक कर दिया।
नीलपरी से सभी की चोटें नहीं देखी गईं तो उसने तीसरा जादू करके सभी को वापस स्वस्थ कर दिया।
रुक जाओ! इस बार एक-एक उपहार लो, उसके ऊपर जिसका नाम हो उसे दे दो।
सभी ने ऐसा किया और देखते-देखते सभी को अपने मनपसंद उपहार मिल गए
यदि दूसरों को दोगे तो तुम्हें खुद के लिए मिलता ही रहेगा, सिर्फ खुद के लिए ही सोचोगे तो कोई तुम्हारे लिए भी नहीं सोचेगा।
सोनपरी को लगा कि रानीपरी उसे समझा रहीं हैं

सोनपरी ने इतने सारे मित्र बनाए हैं, मैंने तो एक भी मित्र नहीं बनाया! जादू की शक्ति सोनपरी को ही मिलनी चाहिए।
मैं अपने जादुई शीशे में देख रही थी, सोनपरी ने अपने तीनों जादू बुद्धि से मित्र बनाने में उपयोग किए। युक्ति से परिस्तान के लोगों को मित्र बनाया और नीलपरी ने दिल की भावना के अनुसार अनायास ही परिस्तान के जीवों- तितलियों, पक्षियों, जलचरों आदि को मित्र बनाया। तो नीलपरी स्पर्धा जीती है, उसे परीवाला जादू मिलेगा।
मैं समझ गई कि बुद्धि की अपेक्षा होती है कि वह सिर्फ खुद के लिए ही सोचे, और दिल की भावना होती है, खुद से पहले दूसरों का हित देखने की। मुझे बहुत पश्चाताप हो रहा है और मैं रानीपरी तथा आप सभी से माफी माँगती हूँ।
रानीपरी, मेरी विनती है कि सोनपरी को माफ कर दीजिए, क्योंकि उसको हृदय से पश्चाताप हो रहा है।
जादू देने से पहले यह देखना ज़रूरी था कि शक्ति का उपयोग दिल से दूसरों के हित के लिए होता है, ऐसी समझ तुम में है या नहीं। तुम्हें हृदय से पश्चाताप हुआ है तो तुम्हें माफी और जादू दोनों मिलेंगे।

चलो खेलें...

१. कछुए को सही रास्ता ढूँढने में मदद कीजिए।

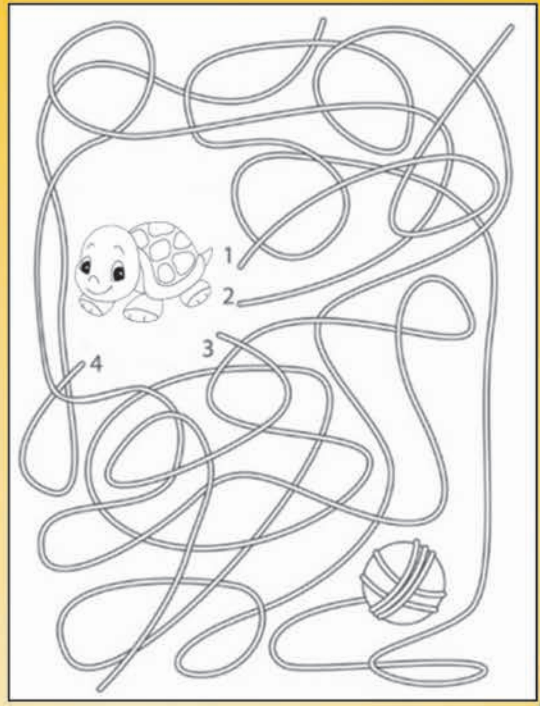

२. नीचे दिए बॉक्स में से जानवरों के नाम ढूँढिए।

G	M	O	U	S	E	H	N	W	R	B	W	C	W	L
X	D	A	Q	H	J	X	O	O	M	L	T	H	W	J
B	W	S	H	N	L	H	T	P	I	C	R	A	W	M
Y	W	M	G	I	R	A	F	F	E	L	K	D	O	G
R	C	K	R	R	R	S	Y	K	T	H	I	P	P	O
J	T	A	W	I	A	F	B	X	X	L	Q	R	J	E
D	R	O	T	A	B	I	L	L	A	E	B	Z	H	X
T	H	N	X	P	B	C	L	I	C	R	V	Z	S	Z
V	N	H	R	S	I	H	E	T	O	R	I	B	I	Q
N	Z	A	C	S	T	Y	X	L	T	N	N	H	F	L
W	U	Q	H	K	L	J	A	E	A	U	F	A	H	F
V	Q	Q	D	P	O	Y	T	I	G	E	R	A	T	V
X	M	T	L	Q	E	T	J	Y	E	S	Y	R	C	H
T	A	C	K	Q	C	L	K	M	O	N	K	E	Y	R
P	T	S	H	W	L	Y	E	T	D	R	A	H	T	L

GIRAFFE, TIGER, MOUSE, CAT, ELEPHANT, RABBIT, LION, DOG, HIPPO, MONKEY

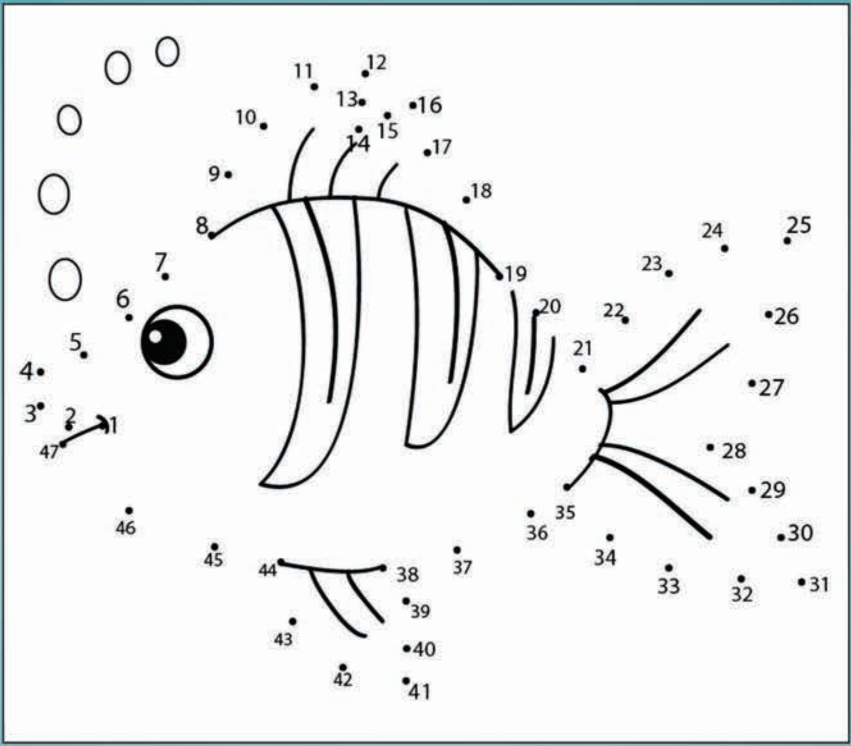

३. बिंदुओं को जोड़कर चित्र पूर्ण करें।

४. सही स्पेलिंग बनाइए।

1. tihabryd ______________
2. ifgt ______________
3. carsd ______________
4. oanllsbo ______________
5. aldensc ______________
6. msuci ______________
7. samge______________
8. tapry ______________
9. onclw ______________
10. akce ______________

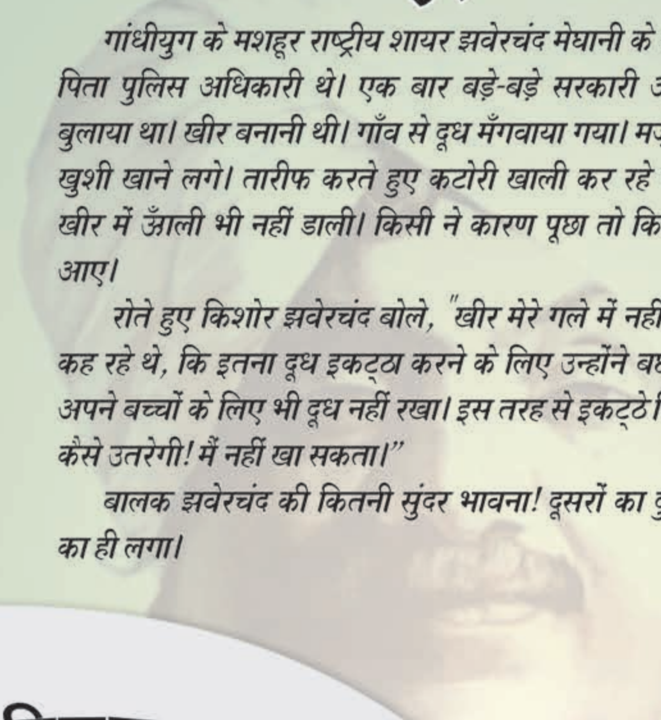

रियल लाइफ स्टॉरी

१.

गांधीयुग के मशहूर राष्ट्रीय शायर झवेरचंद मेघानी के बचपन की बात है। झवेरचंद के पिता पुलिस अधिकारी थे। एक बार बड़े-बड़े सरकारी अधिकारियों को उन्हें खाने पर बुलाया था। खीर बनानी थी। गाँव से दूध मँगवाया गया। मज़ेदार खीर बन गई। सभी खुशी-खुशी खाने लगे। तारीफ करते हुए कटोरी खाली कर रहे थे। लेकिन किशोर झवेरचंद ने खीर में ऊँगली भी नहीं डाली। किसी ने कारण पूछा तो किशोर की आँखों में आँसू छलक आए।

रोते हुए किशोर झवेरचंद बोले, "खीर मेरे गले में नहीं उतर रही। सुबह दूध लानेवाले कह रहे थे, कि इतना दूध इकट्ठा करने के लिए उन्होंने बछड़ों के लिए भी दूध नहीं छोड़ा। अपने बच्चों के लिए भी दूध नहीं रखा। इस तरह से इकट्ठे किए हुए दूध की खीर मेरे गले में कैसे उतरेगी! मैं नहीं खा सकता।"

बालक झवेरचंद की कितनी सुंदर भावना! दूसरों का दुःख उन्हें खुद का ही लगा।

२.

बालमित्रों,

सात साल के डायलन से मिलो। डायलन के मित्र जोनाह को एक बहुत ही असामान्य लिवर की बिमारी हो गई है। अपने मित्र की मदद करने के लिए सात साल के डायलन ने जोनाह के साथ मित्रता के ऊपर "चॉकलेट बार" नामक किताब लिखी।

डायलन ने तय किया कि किताब की बिक्री से आनेवाले पैसे, वह अपने मित्र की बिमारी के उपचार के लिए होनेवाले रिसर्च पर देगा। किताब की बिक्री शुरू हो गई और कुछ ही घंटों में ५,००० डॉलर की रकम जमा हो गई और उसके बाद यह रकम बढ़ती ही गई। दो सालों में ही यह रकम करीब मिल्यन डॉलर तक पहुँच गई है। डायलन की किताब की बिक्री से जमा होनेवाली पूरी रकम सीधी जोनाह रिसर्च फंड में जमा हो जाती है। उस फंड की मदद से डॉक्टर जोनाह के रोग का इलाज ढूँढ़ रहे हैं।

इतने छोटे से बच्चे का कितना बड़ा दिल। खुद का कुछ भी फायदा देखे बिना, अपने मित्र की और उस रोग से पीड़ित मरीज़ों की मदद कर रहा है।

पज़ल के जवाब

१.

२.

३.

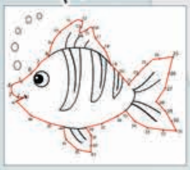

४.

1. birthday	6. music
2. gift	7. games
3. cards	8. party
4. balloons	9. clown
5. candles	10. cake

जर्मन, यु.के. की यात्रा के दौरान बच्चों के साथ पूज्यश्री

Akram Express

June 2016
Year : 4, Issue : 3
Conti. Issue No.: 39

Date of Publication On 8th Of Every Month
RNI No.GUJHIN/2013/53111
Postal Reg. No. G- GNR-306/14-16
valid up To 31-12-2016
LPWP Licence No. CPMG/GJ/119/2014
valid up To 31-12-2016
Posted at Adalaj Post Office
on 08th of every month

अडालज में पूज्यश्री का जन्मदिन महोत्सव...

अक्रम एक्सप्रेस के सदस्यों के लिए सूचना

१. आपकी वार्षिक सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपकी इस महीने में आई हुई अक्रम एक्सप्रेस के कवर के लेबल पर लगे हुए मेम्बरशीप नं. के बाद **#** *हो तो यह आपकी अंतिम अक्रम एक्सप्रेस है। उदा.* **AGIA4313#** *और यदि लेबल पर मेम्बरशीप नं. के बाद* **##** *हो तो अगले महीने में आपकी सदस्यता समाप्त होगी। उदा.* **AGIA4313##** *अक्रम एक्सप्रेस रिन्यूअल की जानकारी संपादकीय पेज पर दी गई है।*

२. यदि किसी महीने का अक्रम एक्सप्रेस आपको नहीं मिला हो तो नीचे दी गई माहिती फोन नं. ८१५५००७५०० पर **SMS** *करें।*

१. कच्ची पावती नंबर या **ID No.**, *२.पूरा ऐड्रेस पिन कोड के साथ, ३. जिस महीने का मैगज़ीन नहीं मिला हो, उस महीने का नाम।*

Publisher, Printer & Editor - Mr. Dimplebhai Mehta on behaif of Mahavideh Foundation
Printed at **Amba offset** :- Parshwanath Chembers, Usmanpura, Ahmedabad - 14 and published